ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

अमृतलाल नागर जी का साहित्य तथा स्त्री वमर्श

शोधार्थी- संध्या शर्मा

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' क वयों ने कहा परन्तु अमृतलाल नागर जी ने कहा

"नारी तुम सर्वस्व हो"

नागर जी के साहित्य में वषय चाहे कोई भी हो चाहे वह राजनीति हो, समाजसंबंधी हो, कसी के भाव हो या फर सामाजिक कुरीतियाँ परन्तु इनके केंद्र में सदैव मुख वषय के रूप में रही तो वह है नारी| नारीको बहुत से क वयों ने अपने लेखनी के जादू से उकेरा है |यथा: प्रसाद जी का कथन है क -"नारी तुम केवल श्रद्धा हो" वहीं कबीरदास जी नारी के वषय में सोचते हैं क "माया महा ठगनी' आदि|

जिस तरह इन्द्रधनुष अपने अन्दर सात रंगों को समेटेहुए है उसी तरह नागर जी का साहिय नारी के अनेक रूपों को समाज के समक्ष वास्त वक रूप में प्रस्तुत करता है | एकफूल की अलग-अलगपत्तियाँ जिस तरह अपने वषय में बोलती है, अपना अस्तित्व हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है उसी तरह नागर जी के उपन्यासों की नारी अपने वर्चस्व को, पहचान को, सचआदि को सभी के समक्ष उसके मूल रूप में प्रस्तुत करते हैं| नारीचाहे कसी भी रूप को फर चाहे वह माँ हो, बहन हो, पत्नी हो,बेटी हो या फर प्रे मका हर एक रूप के संघर्ष को, चुनौतियों की वास्त वकता हो हमारेसामने मूल आधार के रूप में प्रस्तुत करते हैं| उनकेसाहित्य में नारी के स्वरुप को पढ़ कर ऐसा लगता है क-

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

गौरव की मसाल है नारी

काले-सफेद बादलों के बीच छुपा

जल रुपी अनुराग है नारी

कभी सच, कभी झूठ

कभी बंधनों के बीच छुपा

आज़ादी का आगाज़ है नारी|

नागर जी का साहित्य नारी की स्वतंत्रता, स्वछंदताके लए बात करता है| इनके उपन्यासों में नारी जीवन की कई समस्याओं को बड़े ही तर्कपूर्ण रूप में चत्रित कया गया है| अपनेउपन्यासों में एक स्त्री के यौन शोषण, अनमेल ववाह, वधवा जीवन, दहेज़ की समस्या, वेश्यावृति जैसी व वध समस्याओं का वर्णन कया है|

'अग्निगर्भा' उपन्यास में वह कहते हैं क "नारी युगों-युगों से प्रता ड़त रही है| कभी उसे चुराया गया तो कभी उसे बेचा गया| आज भी सूनी सड़कों पर नारी का अकेले निकलना कठिन है| नारी अत्याचार नहीं अपहरण, वेश्यावृतिका व्यापार प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष वद्यमान है|" उपन्यास का पात्र रामेश्वर जब अपनी माँ के समक्ष अपने ववाह का प्रस्ताव रखता है तब उसकी माँ सीता के साथ उसके ववाह का वरोध करती है , और वरोध भी सर्फ इस लए क्यों क उसके साथ आने वाली दहेज़ की मात्रा अत्यंत कम होगी|

सीता एक ऐसी पात्र है जो पग-पग पर अपने आत्मसम्मान व स्वा भमान के लए स्वयं आव़ाज उठाती है| अपने सम्मान को बनाए रखने के लए अनेकों अंत र्वरोधों से होकर गुजरती रहती है| वह आत्मनिर्भर स्त्री की तरह अपनी पसंद के जीवन साथी को प्राप्त करना चाहती है और समाज के द्वारा बनाए गए मूल्यों, परम्पराओं व बंधनों का त्याग करती है|

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

नागर जी के उपन्यास 'नाच्यो बहुत गोपाल' का केन्द्रीय वषय भी नारी ही है| इस उपन्यास की नायिका निर्गु णया अनेक प्रे मयों व स्वा मयों के पुत्रों की कामवासना की शकार होती रही है| अनेक पुरुषों के द्वारा उसकी देह प्रता ड़त अथवा शो षत होती रही है| सदा से ही उसके साथ खलवाड़ कया जाता रहा है| इस उपन्यास में निर्गु णया का ववाह एक ऐसे व्यक्ति के साथ करवा दिया जाता है जो उम्र में उसकी पता की उम्र का होता है| उसके पता से भी शायद उम्र में सात साल के लगभग बड़ा| निर्गु णया चूँ क उम्र में उससे छोटी है और दोनों के बीच उम्र का बहुत ज्यादा अंतर है तो वह अपनी पत्नी की दैहिक व मान सक क्षुधा को तृप्त करने में पूर्णत: अक्षमहै| यही कारण होता है क निर्गुण वद्रोह करती है और मोहन मेहतर के साथ ववाह कर लेती है| जिस प्रकार से प्रेमचंद ने 'गोदान' में एक व्यक्ति(होरी) के कसान से मजदूर बनने पर लखा है ठीक उसी तरह नागर जी ने 'नाच्यो बहुत गोपाल' उपन्यास की नायिका 'निर्गुण' के माध्यम से स्त्री के शोषण और अत्याचार का यथार्थ रूप से वर्णन व चत्रण कया है| वह एक साथ दोहरे दुखों को सहती है-'एक सरती होने का दूसरा मेहतर होने का|'

पुरुषों के शोषण के कारण ही निर्गुण ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने के बावजूद भी मेहतरानी बनना स्वीकार करती है| वह अपने जीवन के कड़वे सच से सबको अवगत करवातीहै| उसके अनुसार दुनिया में दो लोग सबसे पुराने गुलाम हैं- 1. भंगी, 2. औरत|

इस समाज में जब तक यह दो गुलाम पाए जायेंगे तब तक आपकी आज़ादी सौ आने झूठी होगी| इस उपन्यास ने नारी के जीवन की समस्याओं का वास्त वक रूप में चत्रण कया है|उपन्यास के अलग-अलग पात्र नारी के जीवन की प्रत्येक समस्या का वस्तार से अंकन करते हैं| नारी सदियों से ही पुरुषों के लए केवल 'भोग' की वस्तु मात्ररह गई है| नागर जी ने इस उपन्यास में समाज में व्याप्त कौटुम्बिक व्य भचार, वेश्यागमन, बलात्कार, समलैं गकता आदि का वस्तृत रूप में वर्णन कया है| वहीं दूसरी ओर उपन्यास के पात्र निर्गुण के द्वारा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

एक वधवा स्त्री के जीवन की कसक का वर्णन भी कया है| कैसे यह समाज, इस समाज में रहने वाले लोग एक नारी के पति की मृत्यु हो जाने से उसके जीवन को नरक बनाने में कसार नहीं छोड़ते| कैसे समाज उसे प्रता ड़त करता है| उसे ववश करता है कुछ ऐसा करने के लए जिसे करने से बेहतर वह मृत्यु को प्राप्त करने में भी अपनी भलाई खोजने लगती है| लेखक कहते हैं क - " कैसेरिशी देवी (उपन्यास की पात्र) के पति की मृतु के उपरांत उनके घरवाले उसे उनके घर से बाहर निकालते हैं| कहने के लए तो वह उन्हें अपनी बड़ी बहन मानते थे परन्तु पति की मृत्यु के उपरांत सभी रिश्ते मानो समाप्त से हो जाते हैं और कुछ दिनों के उपरांत उनके ससुर ही उनके प्रेमी बन जाते हैं|"

ऐसी-ऐसी कुरीतियों के कारण ही तो आवश्यकता थी वद्रोह की| 'बूँद और समुद्र' उपन्यास में भी जगदम्बा सहाय के भतीजे की बहु ववाह के कुछ समय अर्थात कुछ वर्षों के बाद ही वधवा हो जाती है| जिस कारण उसे मास्टर जगदम्बा सही जी के घर पर ही रहना पड़ता है| घर पर रहने की कीमत वह उनके उसके शरीर पर मा लकाना हक़ के साथ चुकाती है|वह उसके सतह कसी भी प्रकार का अनैतिक कार्य करने से भी पीछे नहीं चूकते और एक दिन जब वह गर्भवती हो जाती है तब वह पुरुष होने के कारण कसी न कसी कारण बेदाग़ बाख जाते हैं| और बेचारी के पास सवाय मरने के कोई वकल्प शेष नहीं बचता|

नागर जी के उपन्यासों ने अलग-अलग रूप में नारी की पीड़ा को समझा| सबसे अच्छी बात यह रही क उन्होंने इस पीड़ा को समझकर चुप्पी धारण नहीं की अ पतु इस चुप्पी के खलाफ आवाज़ भी बुलंद की| उनके उपन्यास 'सुहाग के नुपूर' की नगरवधू की पीड़ा व उससे उत्पन्न कुलवधुओं की पीड़ा का इतना मा र्मक अंकन कया है क उसे पढ़ते ही पाठकवर्ग का ह्रदय भी पी ड़त हो जाता है| उपन्यास की पात्र 'माधवी' के माध्यम से नागर जी ने वेश्यावृति के मूल तक जाने का प्रयास कया है| समस्तवेश्यावर्ग की तड़प और उनकी आह व आँसुओं

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

की प्रतीक है 'माधवी'| ये समाज ही है जो सर्वप्रथम महिलाओं को दलदल में फेंकता हैऔर फर बड़े शौक से उनका मखौल भी उड़ाता है|

नागर जी एक गहन दृष्टि से सम्पन्न रचनाकार थे| उन्होंने सभी चरित्रों में अपनी कल्पना रुपी रंगों को भरकर वर्तमान समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर और एक उज्ज्वल भ वष्य की नवीन आधारभू म तैयार की है| स्त्री वमर्श के साथ-साथ निराशा, असंतोष, अनास्था के सामाजिक वातावरण में उन्होंने मनुष्य की मन की व्यथा और न्याय में निष्ठा आदि को स्था पत करने के लए सभी पाठक वर्गों को व इस सम्पूर्ण समाज को प्रेरित कया | अपनी लेखनी से उन्होंने हिंदी की व वध बो लयों में समाज के समक्ष सभी ज्वलंत मुद्दों को उकेरा व उनका बड़ी ही व वधता के साथ वर्णन कया|